प्रधानमंत्री मोदी के 12 वर्ष पूर्ण होने पर मुख्यमंत्री ने लिखा ब्लॉग....

प्रधानमंत्री मोदी ने लिखा नये भारत के निर्माण का स्वर्णिम अध्याय

डॉ. मोहन यादव

भारत के इतिहास में नरेन्द्र मोदी का लगातार 3 बार प्रधानमंत्री बनना देश के लिये महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लगातार 3 बार सत्ता में आना श्री मोदी की कार्यप्रणाली, सभी को साथ लेकर चलना और देश को सुरक्षा देने के साथ आर्थिक रूप से मजबूत बनाना ही उनकी विशेषता रही है। यशस्वी प्रधानमंत्री जी की इन्हीं विशेष खूबियों ने नये भारत के निर्माण का स्वर्णिम अध्याय लिखा है।

यशस्वी नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2014 में जब प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी, तब देश की जनता ने केवल एक सरकार नहीं चुनी थी, बल्कि शासन की एक नई कार्यशैली और राजनीतिक संस्कृति की अपेक्षा भी व्यक्त की थी। बारह वर्ष बाद इस यात्रा को केवल योजनाओं, आंकड़ों और उपलब्धियों के आधार पर नहीं, बल्कि उस व्यापक दृष्टिकोण के आधार पर समझना अधिक उचित होगा, जिसने शासन की सोच को प्रभावित किया। यदि इन बारह वर्षों को तीन शब्दों में समेटना हो, तो वे शब्द होंगे— सेवा, सुशासन और संकल्प।

प्रधानमंत्री जी की सोच में सेवा का अर्थ केवल कल्याणकारी योजनाएं चलाना नहीं रहा, बल्कि सेवा का अर्थ शासन स्वयं को जनता का संरक्षक और सेवक के रूप में हैं। इस दृष्टि से पिछले बारह वर्षों में शासन की प्राथमिकताओं में अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने की उन्होंने चिंता की है। गरीब, किसान, महिला, युवा और वंचित वर्ग को केवल वोट बैंक के रूप में नहीं, बल्कि विकास प्रक्रिया को केंद्र में रखने की कोशिश की जो सफलता के शिखर तक जा पहुंची। यही सोच पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद में भी दिखाई देती है। मोदीजी की सरकार ने बार-बार यह संदेश दिया है कि विकास का वास्तविक अर्थ तब है, जब उसका लाभ समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति तक पहुंचे।

प्रधानमंत्री की प्रमुखता में सुशासन एक प्रमुख केन्द्र बना। सुशासन का अर्थ सरकार को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और प्रभावी बनाना है। डिजिटल तकनीक का उपयोग इसी दर्शन का हिस्सा था। तकनीक को केवल आधुनिकता का प्रतीक नहीं, बल्कि सुशासन का माध्यम माना गया। शासन और नागरिक के बीच की दूरी कम करने, प्रक्रियाओं को सरल बनाने तथा निर्णयों को अधिक पारदर्शी बनाने की दिशा में लगातार प्रयास किये गये जो लगातार जारी हैं। इसका मूल ध्येय यह है कि आम नागरिक को सरल और सहज तरीके से उसके अधिकार मिलें और योजनाओं का लाभ सहजता से मिल सके।

मुझे यह बताते हुये खुशी है कि श्री मोदी जी देश के पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं जो लोकतंत्र में संवाद को आवश्यक मानते हैं। उनका समय-समय पर अलग-अलग वर्गों से सीधा संवाद करना और उन्हें मार्गदर्शन देना अदभुत है। वे युवाओं के लिये अभिभावक की भूमिका भी निभाते हैं। छात्र-छात्राओं को परीक्षा के समय आत्म मजबूत करने के लिये परीक्षा पर चर्चा जैसे विषयों पर उनका संवाद लगातार जारी रहता है। इसी क्रम में उनकी मन की बात कार्यक्रम को पूरा देश बड़े आत्मीय तरीके से आत्मसात करता है। यही हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री की विशेषता है।

हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार की कार्यशैली में यह स्पष्ट दिखाई दिया देता है कि बड़े निर्णयों से बचने के बजाय उन्हें समाधान तक कैसे पहुंचाया जाए? दरअसल, इसे ही निर्णायक नेतृत्व कहते हैं। यह निर्विवाद है कि निर्णय लेने की क्षमता इस शासनकाल की प्रमुख पहचान रही है।

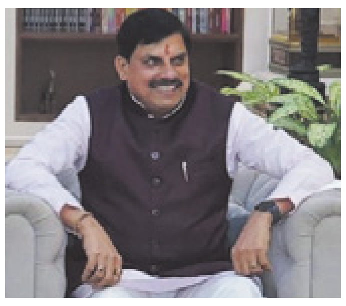

इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में मोदी सरकार ने विकसित भारत को राष्ट्रीय संकल्प के रूप में प्रस्तुत किया। यह संकल्प केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है। इसके भीतर आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय गौरव की भावना भी जुड़ी हुई है। पिछले बारह वर्षों में बार-बार यह संदेश दिया गया कि भारत को केवल विकासशील राष्ट्र के रूप में संतुष्ट नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे विश्व की अग्रणी शक्तियों में स्थान प्राप्त करना चाहिए। यह दृष्टिकोण भारतीय समाज में एक नए आत्मविश्वास का निर्माण करता है।

यशस्वी प्रधानमंत्री श्री मोदी जी से प्रेरणा लेकर हमने भी विकसित मध्यप्रदेश का सपना देखा। यह बताते हुए मन भाव-विभोर है कि मोदीजी का हर कदम पर हर निर्णय पर मार्गदर्शन, स्नेह और आशीर्वाद मिला। चाहे वर्षों से लंबित केन-बेतवा और पार्वती - कालीसिंध -चंबल लिंक परियोजना हो या पीएम मित्र पार्क, उन्होंने आगे बढकर परेशानियों को दूर किया। उनके जैसा नेतृत्व दुर्लभ है। हाल ही में देश के सात राज्यों में पीएम मित्र पार्क बनाने का निर्णय हुआ, तो उस सूची में मध्यप्रदेश को भी रखा गया। यह अति प्रसन्नता का विषय है कि अब तक सिर्फ मध्यप्रदेश में ही पीएम मित्र पार्क का भूमिपूजन हुआ है और यह गौरव का विषय रहा कि धार में पार्क के भूमिपूजन में प्रधानमंत्री जी शामिल हुए। यह सब मध्यप्रदेश से उनके विशेष लगाव का परिणाम ही है।

प्रदेश में साइबर तहसील का सफल क्रियान्वयन हो या भोपाल और इंदौर में मेट्रो रेल, सब प्रधानमंत्रीजी के स्नेह - आशीर्वाद -मार्गदर्शन का ही परिणाम है। आज प्रदेश में नौ एयरपोर्ट हैं, तो इसके पीछे भी उनका ही मार्गदर्शन है। आज हमारा मध्यप्रदेश नक्सल मुक्त है, तो इसके पीछे उनका ही दिशा-निर्देश है। उन्होंने समय - समय पर समझाया, तो चेताया भी। उन्होंने कहा कि गोली का जवाब गोली से दो पर जो लोग बंदूक - हिंसा छोड़कर मुख्यधारा में लौट रहे हैं, उनके लिए बेहतर से बेहतर पुनर्वास की व्यवस्था भी हो। उनकी सलाह-चेतावनी का ही सुफल है कि आज मध्यप्रदेश लाल सलाम को आखिरी सलाम कह चुका है।

प्रधानमंत्रीजी के मार्गदर्शन में ही मध्यप्रदेश में उद्योगों का जाल बिछ रहा है, लाखों करोड़ का निवेश हो रहा है। फरवरी 2025 में भोपाल में आयोजित ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट में शामिल होना, उनका विशेष स्नेह ही तो दर्शाता है। उन्होंने हमें संवेदना की सीख दी है। उनकी सीख ही थी कि हमने अपने शुरूआती निर्णयों में ही इंदौर के हुकुमचंद मिल के कामगारों को उनका बकाया अधिकार दिलवाने में सफलता हासिल की। कामगारों को चेक सौंपने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को प्रधानमंत्री ने वर्चुअली संबोधित भी किया था।

मध्यप्रदेश के सभी 55 जिलों में अग्रणी सरकारी कालेजों को प्रधानमंत्री कालेज आफ एक्सीलेंस के रूप में विकसित करना हो या हाइवे का विकास हो, हर मोर्चे पर प्रधानमंत्री जी ने आगे बढ़कर रूचि दिखाई, मार्गदर्शन -मदद और स्नेह देते रहे। मुझे कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि वे कालजयी, त्रिकालदर्शी नेता हैं। हमारे मार्गदर्शक और संरक्षक मोदीजी के कार्यकाल की एक महत्वपूर्ण विशेषता सांस्कृतिक चेतना का पुनर्रूत्थान भी है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने आधुनिकता को अपनाया, लेकिन अपनी सांस्कृतिक पहचान को लेकर संकोच दिखाई दिया।

पिछले बारह वर्षों में भारतीयता, विरासत और सभ्यता पर गर्व करने का भाव अधिक मुखर होकर सामने आया है। यह विचार केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि भारत की हजारों वर्षों पुरानी सांस्कृतिक यात्रा को आधुनिक राष्ट्र निर्माण से जोड़ने का प्रयास भी है। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण हो, काशी का पुनर्विकास हो, या विश्व मंचों पर भारतीय परंपराओं और योग का प्रचार—इन सभी के पीछे सांस्कृतिक आत्मविश्वास का वही भाव दिखाई देता है। उनसे प्रेरणा प्राप्तकर मध्यप्रदेश भी अपनी विरासत को संजो रहा है। किसी भी राष्ट्र की शक्ति केवल उसकी अर्थव्यवस्था या सेना में नहीं होती। उसकी शक्ति उसके आत्मविश्वास में भी होती है। इस दृष्टि से सांस्कृतिक पुनर्जागरण मोदीजी के कार्यकाल की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 12 वर्षों को यदि केवल योजनाओं और आंकड़ों से समझने का प्रयास किया जाए, तो तस्वीर अधूरी रह जाएगी। इन 12 वर्षों का वास्तविक महत्व उस सोच में है, जिसने शासन को सेवा से, प्रशासन को सुशासन से और राजनीति को संकल्प से जोड़ने का सफल प्रयास किया है। यह कालखंड भारत के आत्मविश्वास, आकांक्षाओं और राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जागरण का कालखंड रहा है। यह नए भारत की आधारशिला है।

आयुर्वेद और योग के विस्तार पर जोर, स्वास्थ्य सेवाओं को मिलेगा नया आयाम

राज्य ब्यूरो नईदुनिया, भोपालः आयुष, उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार ने कहा है कि आयुर्वेद और योग को जन-जन तक पहुंचाकर स्वस्थ एवं जागरूक समाज का निर्माण किया जा सकता है। उन्होंने संस्थानों से इन पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के व्यापक प्रचार-प्रसार और जनभागीदारी बढ़ाने का आह्वान किया।

मंत्रालय में मंगलवार को शासकीय धन्वन्तरि आयुर्वेद महाविद्यालय, उज्जैन की साधारण सभा की बैठक आयोजित हुई। बैठक में महाविद्यालय के विकास, आयुर्वेद आधारित स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और आगामी योजनाओं की समीक्षा की गई। मंत्री परमार ने कहा कि सिंहस्थ-2028 भारतीय संस्कृति, योग और आयुर्वेद को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने का महत्वपूर्ण अवसर है। इस आयोजन के दौरान आयुर्वेदिक उपचार पद्धतियों और योग को अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवनशैली का आधार है। ग्रामीण क्षेत्रों में योग गतिविधियों का विस्तार कर लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाया जा सकता है। साथ ही आयुर्वेद को दैनिक जीवन से जोड़ने के लिए भारतीय रसोई में उपयोग होने वाले मसालों, औषधीय पौधों और पारंपरिक खाद्य पदार्थों की उपयोगिता को भी व्यापक स्तर पर प्रचारित किया जाना चाहिए।

बैठक में पिछले वर्ष लिए गए निर्णयों के अनुपालन की समीक्षा की गई। मंत्री परमार ने महाविद्यालय परिसर में प्रस्तावित 500 बिस्तरों वाले आयुर्वेद चिकित्सालय के लिए भूमि आवंटन प्रक्रिया में तेजी लाने के निर्देश दिए। इसके अलावा नए ऑडिटोरियम, अतिथि गृह और छात्रावास अधीक्षकों के आवास निर्माण के लिए प्रस्ताव तैयार कर शासन को भेजने को कहा।

बैठक में जनप्रतिनिधियों, आयुष विभाग के अधिकारियों और महाविद्यालय प्रबंधन ने भाग लिया। इस दौरान आयुर्वेदिक शिक्षा, अनुसंधान और उपचार सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिए विभिन्न सुझावों पर भी विचार-विमर्श किया गया। इससे उज्जैन क्षेत्र में आयुर्वेद आधारित स्वास्थ्य सेवाओं को नई दिशा मिलने की उम्मीद है।

कचरा पृथक्कीकरण को लेकर निगम परिषद का विशेष सम्मेलन

स्वच्छता नियमों के प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपालः ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम-2026 के प्रभावी क्रियान्वयन और कचरा पृथक्कीकरण को जन-आंदोलन बनाने के उद्देश्य से भोपाल नगर निगम परिषद का विशेष सम्मेलन आयोजित किया गया। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित इस बैठक में जनप्रतिनिधियों ने स्वच्छता, कचरा प्रबंधन और नागरिक जागरूकता से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की।

आईएसबीटी स्थित परिषद सभाकक्ष में आयोजित सम्मेलन की अध्यक्षता निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने की। बैठक में महापौर मालती राय, महापौर परिषद के सदस्य, पक्ष-विपक्ष के पार्षद तथा नगरीय प्रशासन विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे। अधिकारियों ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम-2026 की प्रमुख व्यवस्थाओं और उनके क्रियान्वयन की रूपरेखा से सदन को अवगत कराया।

बैठक में नागरिकों द्वारा कचरे को गीला, सूखा, सेनेटरी और ई-कचरे के रूप में अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। साथ ही वार्ड स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने और स्वच्छ भारत मिशन 2.0 के उद्देश्यों को जन-जन तक पहुंचाने पर सहमति बनी।

महापौर मालती राय ने कहा कि स्वच्छता अब केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि जनभागीदारी का अभियान बन चुका है। उन्होंने कहा कि नागरिकों को कचरा प्रबंधन के नियमों से जोड़ने के लिए विभिन्न संस्थाओं, संगठनों और सामाजिक समूहों के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी। इसके लिए नगर निगम द्वारा विस्तृत कार्ययोजना तैयार की गई है।

निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने कहा कि शहर को पॉलीथीन मुक्त बनाने के लिए सख्त कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने ई-वेस्ट संग्रहण के लिए टोल-फ्री व्यवस्था शुरू करने का सुझाव भी दिया, ताकि नागरिक एक फोन कॉल पर कचरे का सुरक्षित निष्पादन करा सकें। उन्होंने सभी वार्डों में पर्याप्त सफाई मित्रों की तैनाती सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों ने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम-2026 के व्यापक प्रचार-प्रसार और उसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सामूहिक प्रयास करने का संकल्प लिया। सम्मेलन के अंत में विभिन्न दिवंगत व्यक्तियों को श्रद्धांजलि अर्पित कर सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई।

बुजुर्ग महिला की निर्मम हत्या कुल्हाड़ी से काटे दोनों पैर

नप्र, भोपालः राजधानी के देहात क्षेत्र नजीराबाद थाना अंतर्गत पथरिया गांव में एक दिल दहला देने वाली वारदात सामने आई है। 60 वर्षीय बुजुर्ग महिला बादाम बाई की कथित रूप से चांदी के कड़े लूटने के लालच में हत्या कर दी गई। आरोपी ने पहले महिला का गला घोंटा, फिर कुल्हाड़ी से दोनों पैर टखनों के पास से काट दिए और कड़े निकालकर शव को जंगल में फेंक दिया। चार दिन बाद शेषापुरा के जंगल में महिला का सड़ा-गला शव बरामद हुआ। पुलिस के अनुसार, घटना 4 जून की है। गांव के ही जसवंत गुर्जर ने महिला को उनके बेटे रवि से मिलाने का झांसा देकर बाइक पर बैठाया और अपने साथ ले गया। आरोप है कि उसने सुनसान स्थान पर महिला की हत्या कर दी। वारदात के बाद आरोपी ने कुल्हाड़ी से दोनों पैर काटकर चांदी के कड़े निकाल लिए। महिला का एक हाथ का पंजा भी गायब मिला है। लगभग चार दिन बाद स्थानीय लोगों ने शेखापुरा के जंगल में महुए के पेड़ के नीचे सड़ा-गला शव देखा। शव में कीड़े लगे हुए थे। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। पुलिस ने मामले की जांच के दौरान आरोपी जसवंत गुर्जर को गिरफ्तार कर लिया। प्रारंभिक जांच में हत्या के पीछे लूट की मंशा सामने आई है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ हत्या, लूट और साक्ष्य नष्ट करने सहित विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कांग्रेसियों ने निर्वाचन आयोग के गेट पर दिया धरना

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपालः कांग्रेस की राज्यसभा उम्मीदवार मीनाक्षी नटराजन का नामांकन पत्र निरस्त होने के विरोध में कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने मंगलवार शाम को राजधानी स्थित भारत निर्वाचन आयोग कार्यालय के गेट पर धरना दिया। कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी, प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंड सिंघार सहित कई नेता गेट के सामने सड़क पर लेट गए।

इससे पहले कांग्रेस नेताओं ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर आरोपों को निराधार बताया। कहा- मीनाक्षी के खिलाफ कोई आपराधिक प्रकरण नहीं है। उन्हें कोर्ट से केवल एक नोटिस मिला था। नामांकन रद्द होने के फैसले के खिलाफ हम अदालत जाएंगे। दिल्ली में कांग्रेस के राष्ट्रीय संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल के नेतृत्व में पार्टी प्रतिनिधिमंडल भारत निर्वाचन आयोग के पास पहुंचा। यहां धरना भी दिया।

दिनभर ऐसे चला घटनाक्रम

क्रॉस वोटिंग की आशंका पर कांग्रेस ने अपने सभी विधायकों को बेंगलुरू शिफ्ट करने का फैसला किया। सभी विधायकों को भोपाल एयरपोर्ट पहुंचने का निर्देश दिया। कुछ विधायक परिवार और स्टाफ को लेकर एयरपोर्ट पहुंचे। स्टार एयरलाइंस का 75 सीटर विमान दोपहर ढाई बजे भोपाल एयरपोर्ट पहुंचा। एयरपोर्ट अथॉरिटी ने उड़ान की परमिशन देने से इंकार कर दिया था। बीजेपी नेता विधानसभा पहुंचे। रिटर्निंग ऑफिसर के सामने कहा- मीनाक्षी ने तेलंगाना के हैदराबाद कोर्ट में मामला लंबित होने की जानकारी छिपाई है। उनका नामांकन रद्द किया जाए।

रिटर्निंग ऑफिसर अर्पित शर्मा ने कांग्रेस उम्मीदवार मीनाक्षी नटराजन को कारण बताओ नोटिस जारी कर शाम साढ़े 5 बजे तक जवाब मांगा। कांग्रेस नेता वकीलों को लेकर रिटर्निंग आफिसर के पास पहुंचे।

कांग्रेस नेताओं ने जवाब दिया कि मीनाक्षी के खिलाफ कोई आपराधिक प्रकरण नहीं है। उन्हें कोर्ट से केवल एक नोटिस मिला था। रिटर्निंग ऑफिसर ने शाम साढ़े 5 बजे फैसला बताने की बात कही। साढ़े 4 बजे फ्लाइट को परमिशन मिली। 38 कांग्रेस विधायकों समेत 75 लोग इसमें सवार हुए। 22 विधायकों के रात साढ़े 8 बजे वाली रूटीन फ्लाइट से बेंगलुरू जाने की बात तय हुई।

विधानसभा परिसर में बीजेपी और कांग्रेस नेताओं ने नारेबाजी की। कांग्रेस विधायक हेमंत कटारे और विक्रांत भूरिया ने रिटर्निंग ऑफिसर के कमरे में घुसने की कोशिश की। सुरक्षाकर्मियों के साथ धक्कामुक्की हो गई।

मंत्री राकेश सिंह, कैलाश विजयवर्गीय और बीजेपी के अधिवक्ता संकेत गुप्ता रिटर्निंग अफसर के कमरे में पहुंचे। बीजेपी प्रत्याशी महेश केवट को न पहचान पाने के कारण सुरक्षाकर्मियों ने रोक दिया। बाद में उन्हें अंदर जाने की परमिशन दी गई। शाम करीब साढ़े 6 बजे कांग्रेस विधायकों के विमान का इंजन स्टार्ट हुआ। इसमें 38 विधायकों के साथ 75 लोग थे। रिटर्निंग ऑफिसर अर्पित शर्मा ने कांग्रेस उम्मीदवार मीनाक्षी नटराजन का नामांकन पत्र खारिज कर दिया। कांग्रेस विधायकों का विमान रनवे से लौटा। कांग्रेस ने रिटर्निंग ऑफिसर के फैसले पर विरोध जताया। कोर्ट जाने की बात कही। मीडिया से कहा- साढ़े 7 बजे प्रेस कॉन्फ्रेंस करेंगे।

बीजेपी दफ्तर में जश्न शुरू हुआ। नेताओं ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई दी। कांग्रेस ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा- बुधवार को निर्वाचन आयोग के दफ्तर के सामने हमारे सभी विधायक भूख हड़ताल पर बैठेंगे। सभी जिला कांग्रेस कमेटियां भी इस तरह के आदेश के खिलाफ उपवास करेगी।

पूर्व जज गिरीबाला सिंह को विशेष सुविधा नहीं : जेल प्रशासन

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपालः भोपाल सेंट्रल जेल में बंद पूर्व न्यायाधीश गिरीबाला सिंह और समर्थ सिंह को विशेष सुविधाएं दिए जाने संबंधी खबरों का जेल प्रशासन ने खंडन किया है। जेल विभाग के डीआईजी संजय पंड्या ने कहा कि इस प्रकार के आरोप पूरी तरह निराधार और तथ्यहीन हैं।

डीआईजी पंड्या ने बताया कि गिरीबाला सिंह को किसी प्रकार की विशेष सुविधा नहीं दी गई है। हालांकि उनके जेल वारंट में सुरक्षा संबंधी विशेष निर्देश दर्ज थे। उन्होंने कहा कि गिरीबाला सिंह अपने न्यायिक कार्यकाल के दौरान कई अपराधियों को सजा सुना चुकी हैं, जिनमें कुछ भोपाल जेल मे सज़ा काट रहे हैं। जो वर्तमान में भोपाल जेल में बंद हैं। इनमें महिला कैदी भी शामिल हैं। इसी कारण उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक एहतियाती कदम उठाने के निर्देश,जेल वारंट मे दिए थे।

उन्होंने स्पष्ट किया कि सुरक्षा व्यवस्था और विशेष सुविधा दो अलग-अलग बातें हैं। जेल में सभी कैदियों के लिए समान नियम लागू हैं और किसी को भी विशेष खान-पान, आवास या अन्य अतिरिक्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराई जातीं।

डीआईजी ने कहा कि आवश्यकता पड़ने पर जेल अधीक्षक से इस संबंध में शपथ-पत्र भी प्रस्तुत कराया जा सकता है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक कैदी को जेल कैंटीन से निर्धारित सीमा तक सामान खरीदने की अनुमति होती है, जो सभी बंदियों के लिए समान रूप से लागू है।

महिला कैदियों के लिए जेल मे नहीं है कोई अस्पताल

डीआईजी के अनुसार भोपाल जेल में महिला कैदियों के लिए अलग अस्पताल नहीं है। महिला बैरक में ओपीडी के माध्यम से उपचार उपलब्ध कराया जाता है, जबकि पुरुष कैदियों के लिए लगभग 100 बिस्तरों वाली डिस्पेंसरी संचालित है।

डिप्टी जेलर के तबादले की खबरें भी निराधार

जेल प्रशासन ने किसी डिप्टी जेलर को हटाए जाने या स्थानांतरित किए जाने संबंधी खबरों को भी अफवाह बताते हुए खारिज किया है। प्रशासन का कहना है कि ऐसी सूचनाओं का वास्तविक तथ्यों से कोई संबंध नहीं है।

3 साल बाद पुरुषोत्तम मास में सोमवती अमावस्या का संयोग

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपालः 3 साल के अंतराल के बाद पुरुषोत्तम मास में सोमवती अमावस्या का विशेष संयोग बन रहा है। 15 जून को उदया तिथि में सोमवती अमावस्या आस्था और श्रद्धा के साथ मनाई जाएगी। सोमवती अमावस्या पर शहर से हजारों लोग मां नर्मदा और शिप्रा में डुबकी लगाने रवाना होंगे, वहीं शहर के मंदिरों, मठों और आश्रमों में अमावस्या के तहत् विशेष अनुष्ठान और तर्पण के आयोजन किए जाएंगे। उल्लेखनीय है कि सनातन परंपरा में अमावस्या तिथि सोमवार को आती है तो इसे सोमवती अमावस्या कहा जाता है। इस साल 2026 की पहली सोमवती अमावस्या पुरुषोत्तम मास में पड़ रही है, जिससे इसका आध्यात्मिक महत्व कई गुना बढ़ गया है। ज्योतिषाचार्य पंडित रामचन्द्र शर्मा वैदिक के अनुसार, सोमवती अमावस्या का दिन भगवान शिव और माता पार्वती की आराधना के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। इस दिन श्रद्धा और नियमपूर्वक पूजा-पाठ करने से विशेष पुण्य फल की प्राप्ति होती है। खासकर सुहागिन महिलाओं के लिए यह व्रत बेहद फलदायी माना गया है। सोमवती अमावस्या का व्रत करने से अखंड सौभाग्य, सुख-समृद्धि और वैवाहिक जीवन में खुशहाली का आशीर्वाद मिलता है, साथ ही पितरों की भी कृपा बरसती है। सोमवती अमावस्या पर पीपल के पेड़ की 108 बार परिक्रमा करने का विधान है। पुरुषोत्तम मास होने के कारण पीपल में भगवान विष्णु का वास और अधिक फलदायी हो जाता है। इस दिन पितरों के नाम से जल में तिल मिलाकर तर्पण करें और उनके निमित्त गीता का पाठ करें। इससे पितृ प्रसन्न होते हैं और सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं। वैदिक पंचांग के अनुसार, ज्येष्ठ अधिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि 14 जून को दोपहर 12 बजकर 19 मिनट से शुरू होगी और 15 जून को सुबह 8 बजकर 23 मिनट तक रहेगी।

अमावस्या तिथि 14 जून को दोपहर में लगेगी और 15 को सुबह 8.23 बजे तक रहेगी

कृत्रिम नेत्र रोग प्रत्यारोपण से बदली दो युवाओं की जिंदगी

नईदुनिया प्रतिनिधि, हिनप्रः कई लोगों के लिए आंखों की समस्या केवल एक चिकित्सकीय परेशानी होती है, लेकिन कुछ लोगों के लिए यह जीवनभर का भावनात्मक संघर्ष बन जाती है। विदिशा जिले की 29 वर्षीय रागिनी और भोपाल के 28 वर्षीय विकास (परिवर्तित नाम) भी लंबे समय से एक-एक आंख की गंभीर विकृति के कारण ऐसा ही दंश झेल रहे थे। इसकी वजह से उनकी केवल नेत्र ज्योति ही प्रभावित नहीं थी, बल्कि आंख की विकृत बनावट के कारण उन्हें समाज में उपहास और हीन भावना का शिकार होना पड़ता था। जब भी उनके वैवाहिक रिश्तों की बात चलती, आंख की विकृति हमेशा आड़े आ जाती थी और उन्हें अपमान का घूंट पीकर रह जाना पड़ता था।

सेवा सदन आई हॉस्पिटल से जगी नई उम्मीदः मानसिक और सामाजिक रूप से संघर्ष कर रहे इन दोनों युवाओं को हाल ही में भोपाल के सेवा सदन आई हॉस्पिटल में एक नई उम्मीद मिली। यहां उपलब्ध अत्याधुनिक कृत्रिम नेत्र (प्रोस्थेटिक आई) प्रत्यारोपण तकनीक से न केवल उनके चेहरे का सामान्य स्वरूप लौटाया गया, बल्कि उन्हें उनका खोया हुआ आत्मविश्वास, सम्मान और भविष्य के प्रति नई आशा भी वापस दिलाई गई। शुरुआत में दोनों मरीजों और उनके परिजनों ने अस्पताल में पहले से उपचार करा चुके अन्य मरीजों के सकारात्मक परिणाम देखे, उनसे बातचीत की तथा इलाज से जुड़ी सभी जरूरी जानकारियां प्राप्त कीं।

वरिष्ठ विशेषज्ञों का परामर्श और अनूठा भरोसा : मरीजों की झिझक को दूर करते हुए अस्पताल की वरिष्ठ चिकित्सक एवं ऑक्यूलोप्लास्टी विशेषज्ञ डॉ. रोहिनी गर्डे ने उन्हें विस्तार से परामर्श दिया। उन्होंने आश्वस्त किया कि उपचार के बाद उनका चेहरा बिल्कुल सामान्य दिखाई देगा और कोई भी आसानी से यह नहीं पहचान पाएगा कि उनकी आंख कृत्रिम है। इस गहरे भरोसे के बाद दोनों मरीजों ने इलाज कराने का दृढ़ निर्णय लिया।

अनुभवी डॉक्टरों की टीम और सफल उपचार : डॉ. रोहिणी गर्डे ने जयपुर के प्रसिद्ध ऑक्यूलरिस्ट श्री गोपाल पाटनकर के सहयोग से दोनों का सफल उपचार किया। श्री पाटनकर पिछले 7 वर्षों से सेवा सदन आई हॉस्पिटल से निरंतर जुड़े हुए हैं और अब तक लगभग 4,500 कृत्रिम नेत्र तैयार कर चुके हैं। गौरतलब है कि डॉ. रोहिणी गर्डे एवं श्री गोपाल पाटनकर ने देश के प्रतिष्ठित 'एल.वी. प्रसाद नेत्र संस्थान, हैदराबाद' से ऑक्यूलोप्लास्टी एवं ऑक्यूलर प्रोस्थेटिक्स का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया है और वे अपने क्षेत्र में अत्यंत अनुभवी हैं।

16 से खुलेंगे प्रदेश के सभी सरकारी स्कूल, शिक्षकों ने शुरू की तैयारी

नप्र, भोपालः प्रदेश के सभी सरकारी स्कूल 16 जून से नए शैक्षणिक सत्र के लिए पुनः शुरू होने जा रहे हैं। इसके मद्देनजर सोमवार से ही शिक्षक स्कूलों में पहुंचने लगे हैं और विद्यार्थियों के स्वागत के साथ-साथ शैक्षणिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने में जुट गए हैं। स्कूलों में साफ-सफाई, पाठ्य सामग्री की तैयारी और अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दिया जा रहा है। नए सत्र की शुरुआत के साथ ही प्रदेश के सांदीपनि विद्यालयों में परिवहन व्यवस्था को लेकर चुनौतियां भी सामने आ रही हैं। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए निश्शुल्क बस सेवा उपलब्ध कराई गई है, लेकिन पर्याप्त बसों की कमी और संचालन संबंधी समस्याओं के कारण कई जगह विद्यार्थियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इसका अधिक असर ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों पर पड़ रहा है। प्रदेश में कुल 275 सांदीपनि विद्यालय संचालित हैं, जिनमें से 150 में बस सेवा उपलब्ध है, जबकि 125 विद्यालय अब भी परिवहन सुविधा से वंचित हैं। कई स्थानों पर विद्यार्थियों की संख्या के अनुपात में बसों की कमी है, वहीं कुछ जगह भुगतान और संचालन विवादों के कारण सेवाएं बाधित हो रही हैं। ऐसे में विद्यार्थी निजी वाहन, ऑटो और अन्य साधनों का उपयोग करने को मजबूर हैं। विभागीय अधिकारियों के अनुसार कई स्थानों पर स्कूलों की दूरी कम होने के कारण विद्यार्थियों को साइकिल से आने-जाने की सलाह भी दी जा रही है। परिवहन व्यवस्था के लिए संभाग स्तर पर टेंडर जारी किए गए थे, जो समाया ट्रांसपोर्टेशन प्राइवेट लिमिटेड को सौंपे गए थे। कंपनी को प्रति विद्यार्थी 2100 रुपये परिवहन शुल्क दिया जा रहा था।